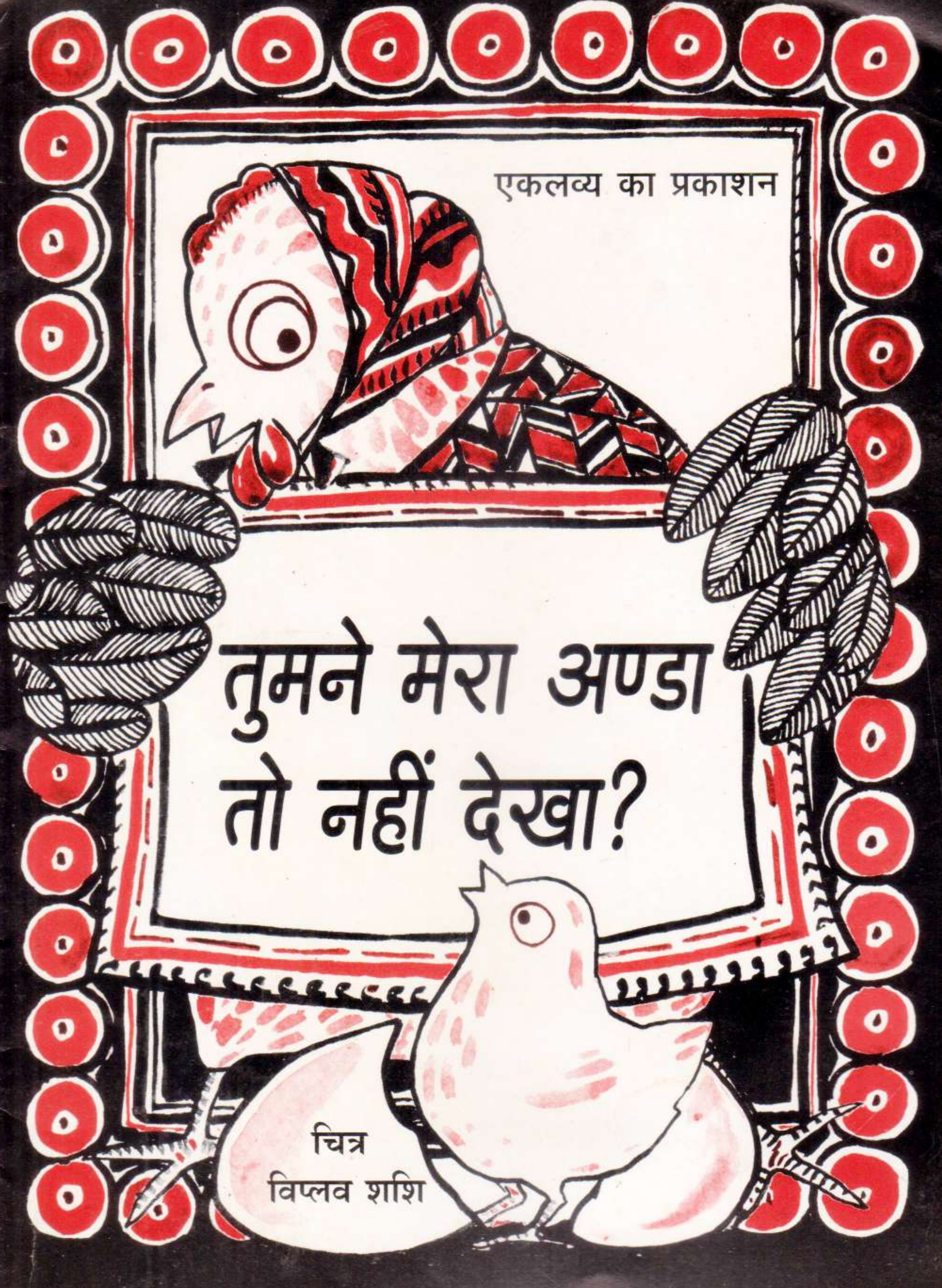
एकलव्य का प्रकाशन

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?



चित्र
विप्लव शशि

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?

बाल गतिविधि कार्यक्रम,
पलिया पिपरिया, ज़िला होशंगाबाद
द्वारा रूपान्तरित कहानी
चित्र : विप्लव शशि

एकलव्य का प्रकाशन

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?

Tumne Mera Anda To Nahin Dekha?

बाल गतिविधि कार्यक्रम, पलिया पिपरिया, ज़िला होशंगाबाद द्वारा रूपान्तरित कहानी

चित्र : विप्लव शशि

जून 2006 / 2500 प्रतियाँ

90gsm मेपलिथो और 135gsm आर्टकार्ड (कवर) पर प्रकाशित

सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

मूल्य : 25.00 रुपए

ISBN: 81-87171-80-4

प्रकाशक : एकलव्य
ई-7/ एचआईजी 453, अरेरा कॉलोनी
भोपाल (म. प्र.) 462 016
फोन (0755) 246 3380, 246 4824
फैक्स (0755) 246 1703
ईमेल : info@eklavya.in
सम्पादकीय : books@eklavya.in

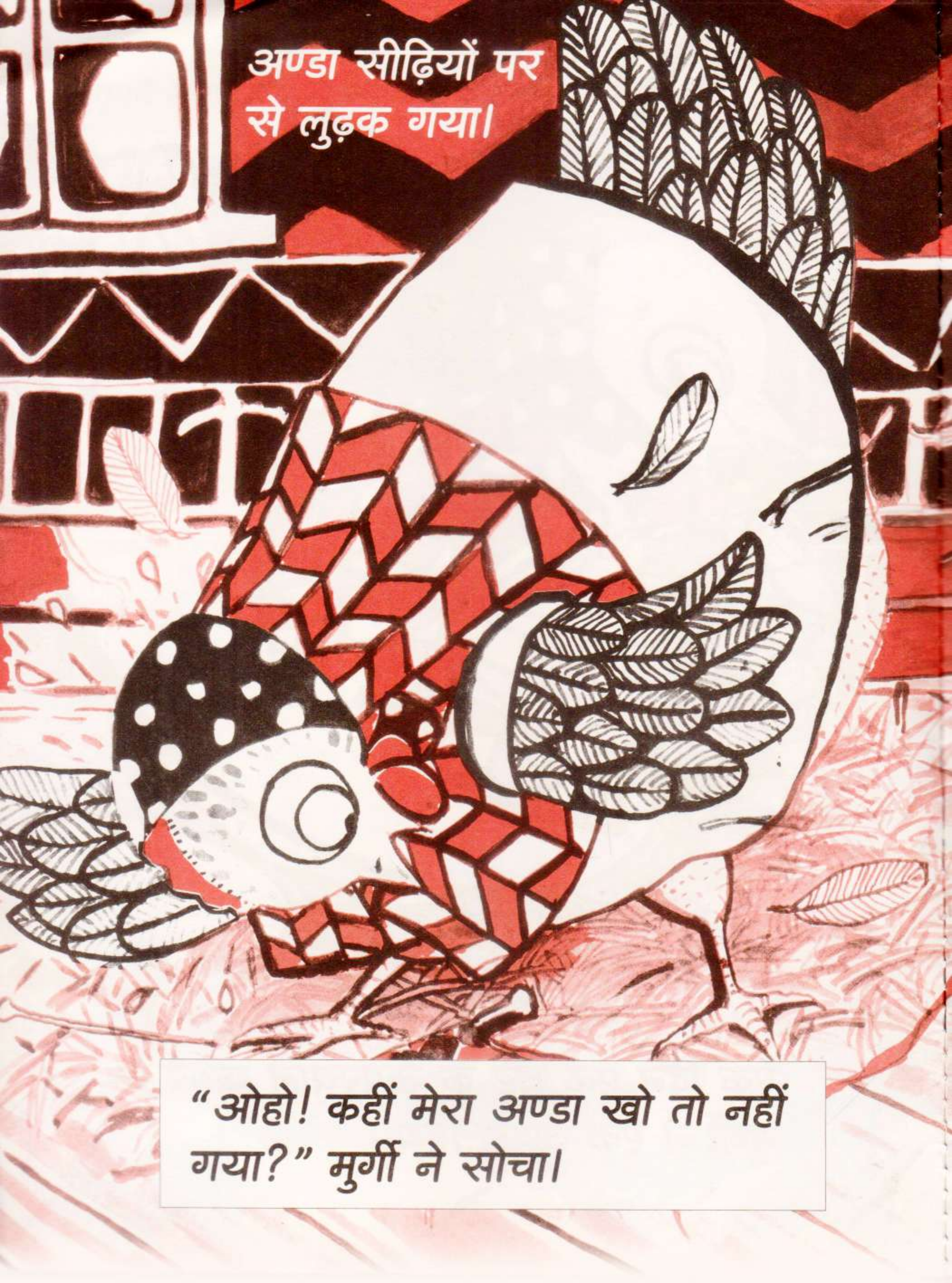
मुद्रक : भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, अरेरा कॉलोनी, भोपाल,
फोन (0755) 246 3769





एक दिन एक घर के ऊपरवाले कमरे में मुर्गी ने एक अण्डा दिया।

अण्डा सीढ़ियों पर से लुढ़क गया।



"ओहो! कहीं मेरा अण्डा खो तो नहीं गया?" मुर्गी ने सोचा।





मुर्गी ने सीढ़ियाँ उतरते हुए बक्कू बकरे से पूछा, “तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?”

“हाँ, हाँ, देखा है,” बक्कू ने कहा। “वह मेरी डबलरोटी पर गिरा था। फिर मेज़ से लुढ़ककर खिड़की से बाहर चला गया।”





“तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?”
मुर्गी ने छोटी चिड़िया से पूछा।

“हाँ, हाँ, देखा है,” चिड़िया बोली।
“वह नाली में से लुढ़कता हुआ उस
छेद में चला गया।’





मुर्गी दौड़कर बाहर गई। उसने बड़कू सुअर से पूछा, "तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?'



"तुम्हारा अण्डा मेरे सिर पर टपका था," बड़कू बोला। "फिर पीठ से लुढ़ककर मेरी पूँछ के छल्ले में से बाहर निकल गया।"



मुर्गी दौड़कर आँगन में गई।
"तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?"
उसने बत्तख से पूछा।

"हाँ, मैंने देखा है," बत्तख बोली। "वह लुढ़ककर बाड़े के पार निकल गया।"





मुर्गी आगे गई। वहाँ छुटकू खरगोश
अण्डों पर रंग कर रही थी।

“तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?”
उसने छुटकू से पूछा।

“हाँ, हाँ, मैंने देखा है,” छुटकू
बोली। “एक छोटा-सा,
प्यारा-सा अण्डा लकड़ी
के उस छेद में घुसा है।”







मुर्गी लकड़ी के दूसरे सिरे पर पहुँची। ओहो! उसने जैसे ही अपने अण्डे को देखा, वह एक बिल में घुस गया।

"हाय मेरा अण्डा! हाय मेरा अण्डा!" मुर्गी रोने लगी। "मेरा अण्डा खो गया। खो गया, खो गया, खो गया मेरा अण्डा!"

लेकिन तभी.....

..... एक चूही उस बिल में से बाहर निकली। वह बोली, "मुर्गी, मुझे तुम्हारा अण्डा मिल गया.....





.....पर उसे कुछ हो गया है। उसके टुकड़े
हो गए हैं। लेकिन उसे ध्यान से देखो.....
तो तुम्हें पता चलेगा कि.......



..... अब तुम्हारे पास एक प्यारा-सा चूज़ा है।"
मुर्गी बहुत खुश हुई। उसका अण्डा तो नहीं रहा, लेकिन उसके पास अब छोटू चूज़ा है।







"राम-राम अम्मा!" छोटू चूज़ा बोला।

मुर्गी और खुश हो गई। क्या तुम भी खुश हो?



एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों तो स्कूली शिक्षा भी सार्थक हो जाती है। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं - मासिक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक*, विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर *स्रोत* तथा शैक्षिक पत्रिका *संदर्भ*। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

पढ़ना सीख रहे बच्चों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए एकलव्य ने हिन्दी में कई चित्रकथाएँ प्रकाशित की हैं, जैसे *रूसी और पूसी, चूहे को मिली पेंसिल, नाव चली, मैं भी, बिल्ली के बच्चे, भालू ने खेली फुटबॉल, नटखट गधा, नन्हे चूज़े की दोस्त..., छुटकी उल्ली*। इनमें से कुछ किताबें अँग्रेज़ी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, गोंडी और कोरकू में भी उपलब्ध हैं। इसी कड़ी में यह किताब - *"तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?"*, प्रस्तुत है।

चित्रकथाएँ क्यों?

पढ़ना सीख रहे और हाल ही में पढ़ना सीखे बच्चों को अपने इस नए हुनर को बार-बार आज़माने के लिए बहुत-सी कहानियाँ चाहिए होती हैं। ऐसी कहानियाँ जो परिचित सन्दर्भों के इर्द-गिर्द बुनी गई हों; जिनमें कुछ गिने-चुने पात्र हों जो किसी नई परिस्थिति का सामना कर रहे हों, किसी नए सवाल से जूझ रहे हों। कथा में कुछ शब्दों या वाक्यों का दोहराव हो और कुछ नयापन भी। पढ़ने के शुरुआती स्तर पर चित्रकथाएँ इन नए पढ़ाकुओं को ये सब मौके देती हैं।

चित्रकथाओं में खूब सारे चित्र होने चाहिए - ऐसे चित्र जिनमें दिलचस्प बारीकियाँ भी हों; ढूँढने, करने, खेलने के अवसर भी। और साथ ही हर पन्ने पर एक या दो आसान-से वाक्य जो चित्र की बात को पूरा करें। ऐसे में पढ़ते हुए बच्चे खुद ही पूरी कहानी का अर्थ निकाल लेते हैं।

अच्छी चित्रकथाएँ अक्सर ज़िन्दगी भर के लिए बच्चों की दोस्त बन जाती हैं।

ISBN: 81-87171-80-4

मूल्य 25.00 रुपए